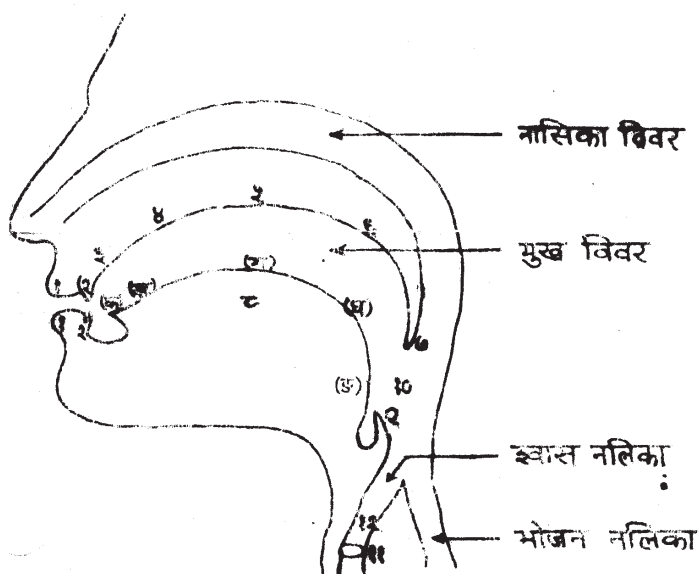


★ **वाक्य** : निश्चित क्रम में एकाधिक पद आकर पूरे अर्थ को व्यक्त करने से वाक्य बनता है।

★ **भाषा** : आपस में विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए हम भाषा में वाक्यों का ही प्रयोग करते हैं।

ध्वनि और वर्ण

ध्वनियों का उच्चारण करते समय हम मुँह के निम्न अंगों को काम में लाते हैं -



१. ओंठ (दोनों) २. दाँत (ऊपर के) ३. वर्त्स (मसूड़ा), ४ कठोरतालु (वर्त्स के पीछे का कठिन भाग) ५. मूर्द्धा (कठोरतालु कोमल तालु का मिलनस्थल) ६ कोमलतालु (मूर्द्धा के पीछे का कोमल भाग) ७ अलिजिह्वा या कौआ (कोमल तालु के अंतिम छोर पर लटकता हुआ मांस खंड) ८ जिह्वा ९. स्वरयंत्रावरण १० उपालिजिह्वा (गलबिल) ११ स्वरयंत्र १२ काकल (स्वरयंत्रमुख)

फेफड़ों से आनेवाली वायु और इन अंगों की सहायता से सभी ध्वनियों का उच्चारण होता है।

★ हिन्दी की ध्वनियाँ और वर्णमाला

उच्चारण की दृष्टि से हिन्दी की ध्वनियाँ दो प्रकार की हैं - स्वर और व्यंजन

स्वर : अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

व्यंजन : 'क' वर्ग - क ख ग घ ङ
 'च' वर्ग - च छ ज झ ञ
 'ट' वर्ग - ट ठ ड ढ ण (ड़ ढ़)
 'त' वर्ग - त थ द ध न
 'प' वर्ग - प फ ब भ म
 अन्तस्थ - य र ल व
 ऊष्म - श ष स ह

मिश्र व्यंजन : क्ष (क्+ष), त्र(त्+र), ज्ञ (ज् + ज), श्र (श् + र)

अयोगवाह : '·' (अनुस्वार) 'ः' (विसर्ग)

क्योंकि-'·' और 'ः' स्वर या व्यंजन नहीं हैं, फिर भी उनके साथ आते हैं ।
 इनके अतिरिक्त '◌' चन्द्रबिन्दु का प्रयोग केवल स्वरों के साथ होता है,
 जैसे- अँ आँ ईँ उँ ऊँ एँ

सभी व्यंजन अलग रूप में साधारणतः आधा उच्चरित हो पाते हैं । पूर्ण रूप से उच्चरित होने के लिए इनके साथ 'अ' मिलाना पड़ता है,

जैसे - क = क् + अ । आधा रूप 'क्' हलन्त लगाकर दिखाया जाता है ।

अरबी-फारसी-तुर्की से आगत शब्दों में क़ ख़ ग़ ज़ फ़ ध्वनियाँ उच्चरित होती हैं । अंग्रेज़ी से आगत शब्दों में ऑ ज़ फ़ का भी उच्चारण होता है ।

स्वर

'स्वर' वे ध्वनियाँ हैं जिनके उच्चारण में मुख विवर से बाहर आती हवा का कहीं कोई अवरोध नहीं होता ।

व्यंजन

व्यंजन वे ध्वनियाँ हैं जिनके उच्चारण में मुखविवर से बाहर आती हवा का कहीं न कहीं पूर्ण या आंशिक अवरोध होता है ।

मात्राएँ

| स्वरध्वनि | मात्रारूप | उदाहरण | स्वरध्वनि | मात्रारूप | उदाहरण |
|-----------|-----------|--------|-------------|-----------|---------|
| आ | ा | का | ओ | ो | को |
| इ | ि | कि | औ | ौ | कौ |
| ई | ी | की | अनुस्वार | ं | कं |
| उ | ु | कु | विसर्ग | : | कः |
| ऊ | ू | कू | चन्द्रबिंदु | ँ | आँ, हाँ |
| ऋ | ॠ | कृ | | | |
| ए | ै | के | | | |
| ऐ | ॡ | कै | | | |

‘र’ के साथ लेखन में ्र और ॄ मात्राओं का योग क्रमशः ‘रु’ और ‘रू’ के रूप में होता है ।

कुछ वर्णों के दो-दो रूप

यहाँ ध्यान देना है कि कुछ वर्ण और अंक दो-दो रूपों में लिखे जाते हैं । कुछ के रूप सर्वमान्य हैं । इन्हें मानक रूप कहते हैं । कुछ रूप ऐसे प्रचलित हैं । उनको मानकेतर रूप कहते हैं । सबको मानक रूपों का ही प्रयोग करना चाहिए । नीचे इनके रूप दिये जाते हैं -

| मानक रूप | मानकेतर रूप | मानक रूप | मानकेतर रूप |
|----------|-------------|----------|-------------|
| अ | अ़ | ण | ण़ |
| आ | आ़ | ध | ध़ |
| ऋ | ऋ़ | भ | भ़ |
| ख | ख़ | ल | ल़ |
| छ | छ़ | श | श़ |
| झ | झ़ | क्ष | क्ष़ |

अर्द्धव्यंजन वर्ण

हिन्दी में अर्द्धव्यंजन वर्णों के रूप चार प्रकार से बनते हैं -

१. कुछ वर्णों का हुक हटाकर - व प
२. कुछ वर्णों की खड़ी पाई हटाकर - ख, ग घ च ज झ ञ ट थ ध
न त ल भ म य ल ळ ष स
३. कुछ वर्णों के नीचे हल् चिह्न लगाकर - ङ् छ् ट् ठ् ड् ढ् ह्
४. 'र' के विशेष रूप - ऋ (क्र), ॠ (कॅ), ॡ (ट्र)

ध्वनियों का उच्चारण

★ स्वरों का उच्चारण

स्वरों के उच्चारण में जिह्वा ही सक्रिय रहती है। कभी जीभ का अगला भाग, कभी मध्य भाग या कभी पिछला भाग उच्चारण में सहायक होता है। इस प्रकार स्वरों के तीन भेद होते हैं -

- १ - अग्र स्वर - इ, ई, ए ऐ
२ - मध्य स्वर - अ
३ - पश्च स्वर- उ ऊ ओ औ आ

स्वरों के उच्चारण में लगनेवाले समय के आधार पर स्वर दो प्रकार से उच्चरित होते हैं ।

- १ - ह्रस्व स्वर - अ इ उ ऋ
२ - दीर्घ स्वर - आ ई ऊ ए ऐ ओ औ

ह्रस्व स्वरों के उच्चारण में कम समय लगता है । दीर्घ स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों की तुलना में दुगुना समय लगता है । ‘ऋ’ का उच्चारण स्वर न होकर व्यंजन ‘रि’ की तरह होता है । फिर भी वर्णमाला में यह स्वर के रूप में गृहीत है । इसे ह्रस्वस्वर माना जाता है ।

★ व्यंजनों का उच्चारण

व्यंजनों के उच्चारण में उनके स्थान और उच्चारण की चेष्टाएँ या प्रयत्न मुख्य होते हैं ।

१ - उच्चारण स्थान : ओंठ, दाँत, वर्त्स, मूर्धा, तालु कण्ठ और काकल स्थान हैं । इनके आधार पर व्यंजन द्व्योष्ठ्य, दन्त्योष्ठ्य, दंत्य, वर्त्स्य, मूर्धन्य, तालव्य, कण्ठ्य और काकल्य होते हैं ।

२ - उच्चारण प्रयत्न : फेफड़ों से आनेवाली हवा को विभिन्न रूप देने के लिए उच्चारण अवयव जो प्रयत्न करते हैं उन्हें उच्चारण प्रयत्न कहते हैं ।

स्पर्श, स्पर्शसंघर्षी, नासिक्य, पार्श्विक, लुण्ठित, उत्क्षिप्त, संघर्षी और अर्द्धस्वर प्रयत्न हैं ।

(i) स्पर्श - मुख विवर में दो स्थानों को 'स्पर्श' कहते हैं ।

अतएव क, त, प, ब आदि स्पर्श ध्वनियाँ हैं ।

(ii) स्पर्श संघर्षी - मुखविवर में हवा के रुकने के बाद घर्षण के साथ बाहर निकलने को 'स्पर्शसंघर्षी' कहते हैं, जैसे :- च, छ, ज, झ

(iii) नासिक्य - हवा के नासिका मार्ग से निकलने से 'नासिक्य' ध्वनियाँ उच्चरित होती हैं, जैसे - ङ, ञ, ण, न, म

(iv) पार्श्विक - हवा के जिह्वा के किनारे (पार्श्व) से होकर निकलने से 'पार्श्विक' ध्वनियाँ उच्चरित होती हैं, जैसे :- ल ।

(v) लुण्ठित - जीभ का अग्रभाव मसूड़े के पास दो तीन बार हिलने से लुण्ठित ध्वनि उच्चरित होती है, जैसे - र

(vi) उत्क्षिप्त - जीभ की नोंक उलटकर कठोर तालु से टकराकर आगे की ओर फेंकी जाने से उत्क्षिप्त ध्वनियाँ उच्चरित होती हैं, जैसे :- ङ ढ ।

(vii) संघर्षी - मुख का मार्ग संकीर्ण होने से हवा घर्षण (रगड़) खाकर निकलने से संघर्षी ध्वनियाँ उच्चरित होती हैं। ऐसी स्थिति में हवा में उष्णता आने से इन्हें 'उष्म' ध्वनि भी कहते हैं। श, ष, स ऐसी ध्वनियाँ हैं।

(viii) अर्द्धस्वर - इनके उच्चारण में स्वर और व्यंजन दोनों के लक्षण मिलते हैं, जैसे— य और व।

व्यंजनों के उच्चारण के और दो आधार भी हैं —

(i) प्राणत्व और (ii) स्वरतंत्रियों में कम्पन

(i) प्राणत्व या श्वास प्रवाह में शक्ति या मात्रा के आधार पर ध्वनियाँ अल्पप्राण या महाप्राण होती हैं। क अल्पप्राण है। ख महाप्राण है। ह प्राण ध्वनि है।

(ii) स्वरयंत्र की स्वरतंत्रियों में कम्पन के आधार पर ध्वनियाँ अघोष या सघोष होती हैं। क अघोष है, ग सघोष।

व्यंजनों का वर्गीकरण

| स्थान | द्व्योष्ठ्य | | दंत्योष्ठ्य | दन्त्य | वत्स्य | मूर्धन्य | तालव्य | कण्ठ्य | काकल्य |
|-------------------|-------------|------------|-------------|------------|-----------|------------|------------|------------|-----------|
| प्रत्यल | प्राणत्व | अघोष सघोष | अघोष सघोष | अघोष सघोष | अघोष सघोष | अघोष सघोष | अघोष सघोष | अघोष सघोष | अघोष सघोष |
| स्पर्श | अल्प महा | प ब फ भ | | त द थ ध | | ट ड ठ ढ | | क ग ख घ | |
| स्पर्श संघर्षी | अल्प महा | | | | | | च ज छ झ | | |
| नासिक्य | अल्प महा | म | | न | | ण | ञ | ङ | |
| पार्श्वक | अल्प महा | | | | ल | | | | |
| लुण्ठित | अल्प महा | | | | र | | | | |
| उत्क्षिप्त | अल्प महा | | | | | ड़ ढ़ | | | |
| संघर्षी | अल्प महा | | फ़ | | स | ष | श | | ह |
| अर्द्धस्वर | | | व | | | | य | | |